Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जून/2024 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

June/2024

Date of Publication:10-06-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

19.5.2024 को हल्क़ा अफ़्ज़ल गंज हैदराबाद (तेलंगाना) में परचा दीनी निसाब लिखते हुए अन्सार अराकीन हैदराबाद ।

27.5.2024 को ज़िला वरनगल शहर के एक वृधाश्रमं में बुज़ुर्गों को फ़ल तक़सीम करते हुए अन्सार, श्री अयान पाशा साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला वरनगल ।

26.5.2024 को मस्जिद हादी में आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा सैंट थॉमस (चेन्नई, तमिलनाडु) के अवसर पर इल्मी मुक़ाबिलाजात का एक दृश्य।

20.5.2024 को श्री सय्यद फ़हीम अहमद साहिब नाइब क़ाइद तरबियत नौ मुबाईन की अध्यक्षता में बामक़ाम इब्राहीमपुर आयोजित ज़िला मुर्शिदाबाद के तरबियती कैंप के आखिर पर एक ग्रुप फ़ोटो ।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ   نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ   وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 22 | **जून 2024** | **Issue -04**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डॉक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय - मोमिन की फ़िरासत (दूरदर्शिता) से डरो	4
निवेदन सदर-ए-मज्लिस अंसारुल्लाह भारत "ज्ञान प्राप्त करना अहमदियों की ज़िम्मेदारी"	6
लेख : भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला "अहमदिया मुस्लिम रिसर्च एसोसिएशन (AMRA) के पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर"	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ○

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम्हें यह कहा जाए कि सभाओं में (दूसरों के लिए) जगह खुली कर दिया करो तो खुली कर दिया करो, अल्लाह तुम्हें खुलापन प्रदान करेगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो। अल्लाह उन लोगों के लिए दर्जों को ऊंचा करेगा जो तुम में से ईमान लाए हैं और विशेषकर उनके जिनको ज्ञान प्रदान किया गया है। और जो तुम करते हो अल्लाह उस से सदा अवगत रहता है। (अलमुजादिला-12)

दर्सुल हदीस

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरा बताते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "ज्ञान प्राप्त करो।" ज्ञान प्राप्त करने के लिए दृढ़ता और धीरज अपनाएं। और जिससे विद्या सीखो उसका आदर-सत्कार करो और नम्रता से व्यवहार करो।

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

अल्लाह तआला ने ज्ञान को तीन श्रेणियों में बांटा है

क़ुर्आन करीम में ऐसी कोई शिक्षा नहीं जो ज़बरदस्ती माननी पड़े अपितु सम्पूर्ण क़ुर्आन का उद्देश्य केवल तीन सुधार हैं और उसकी समस्त शिक्षाओं का सारांश यही तीन सुधार हैं। शेष समस्त आदेश इन सुधारों के लिए साधन मात्र हैं तथा जिस प्रकार किसी समय डाक्टर को भी एक रोगी के स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए कभी चीर-फाड़ करने, कभी मरहम लगाने की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार क़ुर्आन की शिक्षा ने भी मानव सहानुभूति के लिए उन साधनों को यथा-स्थान प्रयोग किया है और उसके समस्त मआरिफ अर्थात् ज्ञान की बातों, वसीयतों तथा साधनों का मूल उद्देश्य यह है कि मनुष्यों को उनकी स्वाभाविक अवस्थाओं से जो अपने अन्दर हिंसक पशुओं जैसा रंग रखती हैं उन्नति देकर नैतिक अवस्थाओं के उच्च स्तर तक पहुंचाए और फिर नैतिक अवस्थाओं से आध्यात्मिकता के अपार सागर तक पहुंचाए।

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी खज़ाइन, खंड 10, पृष्ठ 329-330)

अल्लाह तआला ने ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है। अर्थात् (1) ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास, (2) आंखों से देखकर प्राप्त विश्वास और (3) अनुभव द्वारा प्राप्त अटल विश्वास। तथा सामान्य व्यक्ति को समझने के लिए इन तीनों ज्ञानों के उदाहरण हैं कि यदि एक व्यक्ति दूर से किसी स्थान पर बहुत सा धुआं देखे और धुएं से ध्यान अग्नि की ओर चला जाए तथा अग्नि के अस्तित्व पर विश्वास करे तथा इस विचार से कि धुएं और अग्नि में एक अटूट संबंध तथा पूर्ण अनिवार्यता है। जहां धुआं होगा आवश्यक है कि अग्नि भी हो। अत: इस ज्ञान का नाम ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास है और फिर जब अग्नि की ज्वाला देख ले तो उसका नाम आंखों से प्राप्त विश्वास है और जब उस अग्नि में स्वयं ही प्रवेश कर जाए तो उस ज्ञान का नाम अटल विश्वास है। अत: अल्लाह तआला का कथन है कि नर्क के अस्तित्व का ज्ञान द्वारा विश्वास तो इसी संसार में हो सकता है फिर बरज़ख़ के संसार में आंखों देखा विश्वास प्राप्त होगा तथा मुर्दों के जीवित होने में वही ज्ञान अटल विश्वास की पूर्ण श्रेणी तक पहुंचेगा।

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी खज़ाइन, खंड 10, पृष्ठ 402)

★ ★ ★

सम्पादकीय

"मोमिन की फ़िरासत (दूरदर्शिता) से डरो क्योंकि उसका ज्ञान तक़वा पर आधारित है"

अरबी भाषा में عَلِمَ يَعْلَمُ का अर्थ है किसी चीज़ को जानना, पहचानना, सच्चाई को समझना, निश्चित होना, महसूस करना और प्रमाणित रूप से जानना। इस्लाम ज्ञान का सबसे बड़ा वाहक और उपदेशक और ज्ञान का प्रचारक है जिसका प्रचार और प्रकाशन इक़रा शब्द से शुरू हुआ। इस्लाम की पहली शिक्षा और पवित्र कुरान की पहली आयत, जिसे अल्लाह ने अपने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर प्रकट किया, ज्ञान से संबंधित है। (अल-अलक: 2-6) इस्लामी दृष्टिकोण से, शिक्षा एक समग्र प्रक्रिया है जो व्यक्ति को स्वयं, समाज, ब्रह्मांड, और उसके रचनाकर और उनके आदेशों की पहचान कराती है, मूल रूप से, ज्ञान के दो स्रोत हैं। एक अल्लाह की वह्यी (रहस्योद्घाटन) है जो पैगंबरों के माध्यम से मनुष्यों तक पहुंची, दूसरा मानव अवलोकन और अनुभव है जिसके लिए मनुष्य अल्लाह द्वारा दी गई बुद्धि और इंद्रियों का उपयोग करता है।

पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मिशन का एक उद्देश्य ज्ञान सिखाना है। सदैव ज्ञान वृद्धि के लिए प्रार्थना किया करें। (ताहा: 115) और यह कहा कर कि हे मेरे रब! मेरे ज्ञान में वृद्धि कर।
विद्वानों की परिभाषा वर्णित करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ (अल-फ़ातिर: 29)

वास्तव में, अल्लाह के बंदों में से उस से वही लोग डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं।

भय उस वैभव को कहा जाता है जो किसी की महानता के कारण हृदय में स्थापित हो जाए और इसका प्रभाव व्यक्ति के अंगों और समस्त भागों पर भी स्थापित हो जाए अर्थात सिर और आंखें झुक जाएँ, अर्थात ज्ञान वाले अहंकारी नहीं होते अपितु विनम्र होते हैं। ये सबसे विवेकवान लोग अर्थात ऐसे बुद्धिमान लोग हैं जो ज़मीन और आसमान की रचना और दिन और रात के बदलाव पर विचार करने के साथ-साथ हर समय अल्लाह को भी याद करते रहते हैं।

पवित्र कुरान ने श्रवण, दृष्टि और हृदय को ज्ञान प्राप्त करने का साधन बताया है। प्यारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज्ञान प्राप्त करने को प्रोत्साहित किया और कहा: "अल्लाह जिसके साथ भलाई करने का इरादा करता है तो उसे धर्म की समझ प्रदान करता है।"(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

"जो ज्ञान हासिल करने के इरादा से कहीं जाये, तो अल्लाह उस के लिए जन्नत के रास्ते को आसान (हमवार) कर देता है।"(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

"जो कोई ज्ञान प्राप्त करने के लिए निकलता है, वह लौटने तक अल्लाह के मार्ग में रहेगा।" (तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया "युक्ति की बात एक मोमिन की खोई हुई चीज़ है, जहां कहीं भी इसे पाए वह उसे प्राप्त करने का अधिक अधिकार रखता है।"

(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज्ञान की वास्तविक परिभाषा करते हुए फरमाया :

"ज्ञान और बुद्धि वह खज़ाना है जो प्रत्येक धन से श्रेष्ठ है। संसार का सारा धन नष्ट हो जाएगा, परन्तु ज्ञान और बुद्धि नष्ट नहीं होगी। (परिशिष्ट खण्ड 4 पृष्ठ 161)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल फरमाते हैं :

"ज्ञान और विवेक की खोज में प्रगति के परिणाम और लाभ, पृथ्वी और आकाश के सभी कण अल्लाह तआला के अस्तित्व के गवाह हैं।" इसलिए, जितना सांसारिक ज्ञान या आकाशीय ज्ञान प्रगति करेगा, सर्वशक्तिमान ख़ुदा का अस्तित्व और उसके गुण अधिक स्पष्ट होंगे। (हक़ीकतुल फुरकान, खंड 4, पृष्ठ 85)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फरमाते हैं :-

"पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मोमिन की फिरासत से सावधान रहें, क्योंकि उसका ज्ञान धर्मपरायणता पर आधारित है। संक्षेप में, अल्लाह तआला का प्यार और उसकी महानता आपके दिल और दिमाग में हमेशा कायम रहनी चाहिए। अगर आप इस तरह से रिसर्च करेंगे और अपने काम को आगे बढ़ाने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला आपको बड़ी सफलता प्रदान करेगा। इंशा अल्लाह"

(भाषण 14 दिसंबर 2019, अल-फ़ज़ल 21 दिसंबर 2021 पृष्ठ 7)

हम प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह तआला हमें इन निर्देशों का यथासंभव पालन करते हुए ज्ञान अर्जित करने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

"ज्ञान प्राप्त करना अहमदियों की ज़िम्मेदारी"

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

ख़ुदा तआला ने अपने बंदों को दुआ के साथ साथ अपनी सिफ़ात हसना और कायनात में बिखरे हुए अजाइबात-ए-क़ुदरत का इल्म हासिल करने की भी ताकीद फ़रमाई हो। इस लिए हक़ीक़ी हमद करने वाले वही लोग होते हैं जो अह्ले इल्म और बाशऊर कहलाते हैं। आलिम बाअमल होने के लिए ख़ुदा तआला ने हमें एक दुआ यों सिखलाई है।

وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا (ताहा :115)

और तू कह कि ए मेरे रब! मेरे इल्म को बढ़ा।

किसी चीज़ के बारे में पूर्ण ज्ञान न होना गोया उस चीज़ से अनभिज्ञता और दूरी है। कायनात की हर चीज़ इन्सान के लिए फ़ायदेमंद है लेकिन अगर उस के फ़वाइद-ओ-नुक़्सानात का इल्म ही हासिल ना किया जाये तो वो नुक़्सानदेह भी हो सकती है। इस तरह दुनिया में फैले हुए तमाम उलूम हमारी रहनुमाई एक ख़ालिक़-ओ-मालिक हस्ती की तरफ़ करते हैं लिहाज़ा ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ बाँधने और मुहब्बत बढ़ाने की ख़ातिर ज़रूरी है कि हम उस के गुणों और महानता का भी ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। इस तरफ़ इशारा करते हुए नबी सल्लाल्लाहो अलैहि ने फ़रमाया:

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ

(इबने माजा)

हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वो इल्म हासिल करे।

اُطْلُبُوا الْعِلْمَ مِنَ الْمَهْدِ اِلَى اللَّحْدِ

कि पालना (बच्चे का झूला) के ज़माना से लेकर कब्र में जाने तक इल्म हासिल करो।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने 27 दिसंबर 1920ई० को हाज़िरीन-ए-जलसा सालाना से ख़िताब करते हुए फ़रमाया :

"तुम बे-शक ज़ाहिरी उलूम पढ़ो मगर दीन का इल्म ज़रूर हासिल करो और अपने अंदर दीन की बातें समझने और हासिल करने का गुण पैदा करो। इस लिए एक तो क़ुरआन-ए-करीम सीखो और दूसरे हज़रत साहिब (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) की किताबें पढ़ो और ख़ूब याद रखो कि हज़रत साहिब की किताबें क़ुरआन की तफ़सीर हैं।"

(इस्लाह-ए-नफ़्स,अनवारुल-उलूम जिल्द 5 सफ़ा 447)

बड़ी उम्र के अहमदियों को दीनी तालीम हासिल करने की तरग़ीब दिलाते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामस अय्यदहुल्लाहु

तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"आज ये ज़िम्मेदारी हम अहमदियों पर सबसे ज़्यादा है कि इल्म के हासिल करने की ख़ातिर ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत करें, ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करें। क्योंकि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी क़ुरआन-ए-करीम के भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान दिए गए हैं। और आप के मानने वालों के बारे में भी अल्लाह तआला का वादा है कि मैं उन्हें भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान और तर्क प्रदान करूँगा। तो उस के लिए कोशिश और इल्म हासिल करने का शौक़ और दुआ .. बहुत ज़रूरी है। घर बैठे ये सब भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान नहीं मिल जाऐंगे। और फिर उस के लिए कोई उम्र की शर्त भी नहीं है।.. बड़ी उम्र के लोगों को भी ये नहीं समझना चाहिए कि उम्र बड़ी हो गई अब हम इल्म हासिल नहीं कर सकते। उनको भी इस तरफ़ तवज्जा देने की ज़रूरत है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद की किताबें पढ़ें इस बारे में पहले भी मैं कह चुका हूँ ये सोच कर न बैठ जाएं कि अब हमें किस तरह इल्म हासिल हो सकता है। अब हम किस तरह इस से फ़ायदा उठा सकते हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने तो लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये दुआ जो सिखाई गई, जब ये आयत उतरी आप की उम्र पचपन, छप्पन साल थी। तो कहते हैं कि ये इस लिए है कि मोमिनों को इस तरफ़ तवज्जा करनी चाहिए कि हमारे लिए भी है। किसी भी उम्र में इल्म हासिल करने से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए और मायूस नहीं होना चाहिए।"(ख़ुतबा जुमा 18 जून 2004)

क़ियादत तालीम के तहत मुक़र्ररा पुस्तकों का अध्ययन करते हुए हमें अंसारुल्लाह के इम्तिहान दीनी निसाब में ज़रूर शामिल होना चाहिए और अपने बच्चों को दुनयवी तालीम के साथ-साथ दीनी तालीम से भी आरास्ता करना चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(अताउल मुजीब लोन)
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

★ ★ ★

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

अहमदिया मुस्लिम रिसर्च एसोसिएशन (AMRA) के पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मसीह अलखामीस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के अंग्रेज़ी भाषण का हिन्दी अनुवाद।

(14 दिसंबर 2019ई० मसरूर हॉल, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड, यूके)

(अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक, मुरब्बी-ए-सिलसिला, एम.ए. हिन्दी)

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ○الَّذِيْنَ
يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ
وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا
خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ○

हुज़ूर अनवर ने फरमाया:

पवित्र कुरान की ये आयतें जो मैंने अभी पढ़ी हैं सूरत आल-ए-इमरान की आयत 191 से 192 तक हैं और उनका अनुवाद है:

"निस्सन्देह आसमानों और धरती की उत्पत्ति में और रात और दिन के अदलने-बदलने में बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं। वे लोग जो खड़े हुए भी और बैठे हुए भी और अपने करवट पर लेते हुए भी अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और धरती की उत्पत्ति में चिन्तन-मनन करते रहते हैं। (और सहसा कहते हैं) हे हमारे रब्ब! तू ने कदापि इसे बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया । पवित्र है तू । अत: हमें आग के अज़ाब से बचा ले।"

अल्लाह की कृपा से आज आपको पहला अंतरराष्ट्रीय AMRA सम्मेलन आयोजित करने का अवसर मिल रहा है। मैं आशा और प्रार्थना करता हूं कि यह आयोजन, इसमें शामिल सभी लोगों के लिए उपयोगी और ज्ञान का स्रोत साबित होगा।

पवित्र कुरान की कई आयतों में, जिनमें वे आयतें भी शामिल हैं जिन्हें मैंने अभी पढ़ा है, अल्लाह तआला ने आकाश और पृथ्वी के निर्माण का उल्लेख किया है और हमें अपने जन्म के वास्तविक उद्देश्य पर विचार करने का निर्देश दिया है। इसने हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करने, इसके निर्माण पर विचार करने और अनुसंधान और प्रतिबिंब के माध्यम से मानव विकास के लिए नए तरीके और नए विचार खोजने के लिए प्रेरित किया है।

निस्संदेह, इस तथ्य के कारण कि हमें बुद्धि और समझ का उपहार दिया गया है, अल्लाह तआला ने मनुष्य को 'अशरफ़ुल मख़लूक़ात' (अर्थात सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ और उच्चतम) घोषित किया है। हमें सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता दी गई है। हमें सोचने और समझने की क्षमता दी गई है। मनुष्य सभी प्राणियों में अद्वितीय है। अल्लाह तआला ने मानव जाति को यह ज्ञान दिया है कि उसने जो कुछ भी बनाया है वह हमारे लाभ के लिए है, बशर्ते हम इसका सही तरीके से उपयोग करें।

पवित्र कुरान ने ब्रह्मांड और इसकी शुरुआत के बारे में जो काफी जानकारी (insight) दी है और वैज्ञानिक अनुसंधान और ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरणा की प्रचुरता है, निश्चित रूप से सभी पवित्र धर्मग्रंथों में से वह पवित्र कुरान ही है।

इस संबंध में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी) ने फरमाया है कि जब विश्वास करने वाले लोग पृथ्वी और आकाश और पूरे ब्रह्मांड की संरचना पर विचार करते हैं, तो उनके दिमाग बहुत स्पष्ट हो जाते हैं, परिणामस्वरूप, वे दृढ़ विश्वास की ओर अग्रसर होते हैं कि 'सर्वशक्तिमान ख़ुदा है' क्योंकि वे अपने चारों ओर उसके संकेत और उसके अस्तित्व के प्रमाण देखते हैं।

इसके विपरीत, दुनियादार और नास्तिक शोधकर्ताओं का ज्ञान बहुत सीमित और संकीर्ण है। जब वे किसी चीज़ का अध्ययन करते हैं, तो वे उसका मूल्यांकन सीमित तरीके से करते हैं। लेकिन एक मुत्तकी इंसान केवल संसार के आयामों, उसके भौतिक स्वरूप की पहचान करने या उसके गुरुत्वाकर्षण की गणना करने से संतुष्ट नहीं होता है और न ही वह सूर्य, चंद्रमा और सितारों के गुणों का निर्धारण करने से संतुष्ट होता है। एक सच्चा मोमिन निरंतर प्रयास और संघर्ष से परीक्षण करेगा। वह प्रकृति के संचालन और हमारे आस-पास की दुनिया के बीच पूर्ण सामंजस्य को समझने की कोशिश करता है। ऐसे सच्चे मोमिन पुरुषों और स्त्रियों में इस भौतिक दुनिया के छिपे हुए गुणों और ऊर्जाओं को पहचानने की एक न समाप्त होने वाली प्यास होगी और जैसे-जैसे वे उसकी महिमा और पूर्णता को देखेंगे, वे अपने निर्माता की ओर आकर्षित होंगे और अल्लाह के अस्तित्व में उनका विश्वास बढ़ता जाएगा।

जब एक बुद्धिमान व्यक्ति आकाश और पृथ्वी, ब्रह्मांड और रात और दिन लगातार क्यों बदल रहे हैं, इस पर ध्यान से विचार करता है, तो परिणामस्वरूप, वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा को महसूस करता है और उसकी संपूर्ण रचना की सराहना करता है। जब वह इस प्रकार सर्वशक्तिमान ख़ुदा को देखता है और उसकी महानता को पहचानता है, तो वह और अधिक उत्साह और जुनून के साथ उसकी ओर झुकता है और ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने और जानने में उसकी सहायता और कृपा चाहता है। उसका समर्थन और सहायता प्राप्त करने के लिए, वह उन्हें खड़े होकर, बैठे हुए और करवट लेकर याद करते हैं, जैसा कि पवित्र कुरान की आयतों में वर्णन किया गया है जो मैंने पढ़ा।

जब वे मार्गदर्शन के लिए अल्लाह से दुआ करते हैं, तो वह उनके विचारों को स्पष्ट करता है, उनके दिमाग को प्रबुद्ध करता है और उनके दिमाग में समझ की कमी के कोहरे को साफ करता है। अल्लाह तआला उन्हें ब्रह्मांड और ग्रहों के बारे में समझ देता है और वे निश्चित रूप से पहचानते हैं कि इतनी परिपूर्ण और सटीक प्राकृतिक प्रणाली कभी भी संयोग से या अपने आप नहीं हो सकती लेकिन यह एक महान निर्माता का काम है और एक संकेत है। यह निश्चित रूप से सर्वस्रष्टा के अस्तित्व का प्रमाण है। जिन लोगों के दिमाग खुले और प्रबुद्ध हैं, वे अपने सृष्टिकर्ता के सामने झुकते हैं और उसके क्रोध से बचने के लिए दुआ करते हैं। और वे प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह तआला उन्हें सफलता प्रदान करे और उन्हें उसकी रचना के बारे में सटीक बुद्धि और समझ प्रदान करें।

इसी क्रम में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि भौतिकी, खगोल विज्ञान और वैज्ञानिक विज्ञान का लगातार अध्ययन करने से, एक मोमिन का झुकाव हमेशा सर्वशक्तिमान ख़ुदा की ओर होता है जितना अधिक वह अल्लाह तआला की सृष्टि और दुनिया की रचना के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है उतना ही वह ब्रह्मांड के रहस्यों के कारण अल्लाह की सुंदरता की प्रशंसा करता है। जब कोई मोमिन इस प्रकार का ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेता है, तो वह मोमिन पुरुष या स्त्री न केवल नवीनतम वैज्ञानिक विकास के संदर्भ में दूसरों का मार्गदर्शन करने में सक्षम होता है, बल्कि वे ऐसे (तर्क) के हथियारों से भी लैस होते हैं, जिसके साथ वे उस अद्वितीय ख़ुदा के अस्तित्व को साबित करते हैं जो सारी सृष्टि का स्रष्टा है।

यही सच्चे मोमिन की निशानी है, यही उनकी सफलता का साधन है और दुनिया में सच्चा सम्मान और आदर का रास्ता है।

प्रोफेसर डॉ. अब्दुस सलाम साहब ने ब्रह्मांड पर चिंतन करते हुए अपना जीवन इसी तरह बिताया और उन्हें जो भी अंतर्दृष्टि मिली, उसका उपयोग उन्होंने सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अस्तित्व को साबित करने के लिए किया। इसलिए सभी अहमदी शोधकर्ताओं या शैक्षणिक क्षेत्र के किसी

भी अहमदी को किसी भी शोध या अध्ययन से पहले, उसके दौरान और बाद में ख़ुदा के एकेश्वरवाद को ध्यान में रखना चाहिए। उन्हें अपने शोध के माध्यम से सबूत प्रकट करने के लिए दृढ़ होना चाहिए जो संदेहियों और गैर मोमिनों के लिए ख़ुदा के अस्तित्व को साबित कर सकें। वे उन लोगों का खंडन करने में सक्षम होंगे जो दावा करते हैं कि विज्ञान और धर्म में मतभेद है। जब अहमदी इस तरह से शोध करेंगे और हर कदम पर अल्लाह तआला की मदद चाहेंगे तो निश्चित रूप से अल्लाह तआला हर मोड़ पर उनकी मदद करके उनका मार्गदर्शन करेगा।

जैसा कि मैंने पहले कहा, एक सांसारिक व्यक्ति का शोध पूर्णत: सांसारिक दृष्टिकोण से होता है और वह अपनी बुद्धि का उपयोग केवल सांसारिक उन्नति के लिए ही करता है। उनके प्रयासों से वैज्ञानिक प्रगति हो सकती है, लेकिन एक मोमिन के शोध का प्रभाव कहीं अधिक है। उनके शोध से न केवल वैज्ञानिक प्रगति और आधुनिक तकनीक को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि अहमदी मुस्लिम शोधकर्ताओं को अल्लाह सर्वशक्तिमान के अस्तित्व का प्रमाण भी मिलेगा विशेष रूप से विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्र में काम करने वालों को न केवल अपने क्षेत्र में समझ बढ़ाने के इरादे से काम करना चाहिए, बल्कि ख़ुदा के अस्तित्व के प्रमाण खोजने के शाश्वत दृढ़ संकल्प को भी बनाए रखना चाहिए। जैसा कि मैंने कहा, डॉ. अब्दुल सलाम साहब ने इसी तरह से अपना काम किया और परिणामस्वरूप उन्हें बड़ी सफलता मिली।

याद रखें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि वास्तविक बुद्धिमत्ता और वास्तविक ज्ञान भी वही लोग रखते हैं जो अल्लाह को कभी नहीं भूलते और हमेशा उसे याद करते रहते हैं। इस प्रकार, जहां हमारे वैज्ञानिक और शोधकर्ता अपनी सांसारिक शिक्षा में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं वहाँ उन्हें अपने ईमान की रक्षा करनी होगी, सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अधिकारों को पूरा करना होगा और जो उनका उत्तरदायित्व है कि वह समस्त शक्तियों के मालिक ख़ुदा के अस्तित्व को साबित करने के लिए और अधिक सबूत तलाश करें उन्हें इस उत्तरदायित्व को निभाना होगा।

जो लोग शैक्षणिक क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन में और अहमदी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के बीच हमेशा एक स्पष्ट अंतर होना चाहिए और वह अंतर यह होना चाहिए कि एक अहमदी का ज्ञान अर्जन हमेशा धर्मपरायणता पर आधारित होना चाहिए। पवित्र पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "मोमिन की फिरासत (दूरदर्शिता) से डरो, क्योंकि उसका ज्ञान तक़्वा पर आधारित है। संक्षेप में अल्लाह का प्यार और उसकी महानता हमेशा आपके दिल और दिमाग में दृढ़ता से बनी रहनी चाहिए।" यदि आप शोध करेंगे और अपने काम को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे तो अल्लाह आपको बड़ी सफलता प्रदान करेगा। इन्शाअल्लाह

आप में से कुछ लोग जानते होंगे कि एक बार एक प्रसिद्ध पश्चिमी शोधकर्ता और यात्री, प्रोफेसर क्लेमेंट रैग (Professor Clement Wragge) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलने के लिए क़ादियान गए थे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह ने सूर्य और चंद्रमा, सितारों और ग्रहों को मनुष्य की सेवा और मानव जाति के लाभ के लिए बनाया है।

इस कथन के आलोक में, एक अहमदी शोधकर्ता जब भी किसी अनसुलझे प्रश्न के उत्तर के लिए शोध कर रहा हो तो उसे हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिए कि अल्लाह ने जो कुछ भी बनाया है वह मानव जाति के लाभ के लिए है। एक अहमदी शोधकर्ता का उद्देश्य यह सुनिश्चित करके कि जो भी वैज्ञानिक प्रगति हो रही है, उसका मानव जाति के लाभ के लिए सही तरीके से उपयोग किया जा रहा है, जो कुछ भी वह खोजता है उससे लाभ प्राप्त करना चाहिए।

(शेष भाग जुलाई की पत्रिका में प्रस्तुत किया जाएगा। इंशाअल्लाह)

★ ★ ★

19.5.2024 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह मुरियाकंनी,(ज़िला पालक्काड, केरल) केअवसर पर हाज़िरअन्सार का एक दृश्य।

19.5.2024 को श्री रफ़ीक़ अहमद बेग साहिब नाइब सदर एवं क़ाइद मॉल मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की अध्यक्षता में पत्तापिरियम में आयोजित मीटिंग ज़िला मलप्पुरम (केरल) का एक दृश्य।

19.5.2024 को श्री शैख़ सबाहुद्दीन साहिब मुआविन सदर बराये रिश्ता नाता मज्लिस अंसारुल्लाह भारत की अध्यक्षता में फुलवारा, गोपाल गंज (बिहार) में आयोजित मीटिंग का एक दृश्य।

20.5.2024 को हंसी में आयोजित तरबियती कैंप ज़िला हिसार (हरयाणा) के अवसर पर हाज़िर अन्सार का एक दृश्य ।

25.5.2024 को श्री अज़ीज़ अहमद नासिर नाइब क़ाइद मज्लिस अंसारुल्लाह भारत की अध्यक्षता में परदाना (ज़िला पानीपत, हरयाणा) में आयोजित मीटिंग का एक दृश्य ।

15.05.2024 को श्री रफ़ीक़ अहमद मद्रासी साहिब (तमिल नाडु) क़ादियान (मुहल्लाह मसरूर) में वक़्फ़े आरज़ी के अवसर पर बच्चों के साथ एक ग्रुप फ़ोटो ।